e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201099 |

डॉ० भीमराव अम्बेड्कर के परिप्रेक्ष्य में : समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व

डॉ० गुरनाम सिंह

एसो० प्रोफेसर हिन्दी-विभाग

आई०बी० (पी०जी०) महाविद्यालय, पानीपत

बाबा साहेब अम्बेड्कर के चिन्तन और उनकी समता मूलक उदात्त दृष्टि पर जब भी मन जाता है, सामाजिक जनतंत्र के लिए किए गए उनके कार्य जेहन में कौंधने लगते हैं। सामाजिक जनतंत्र को केन्द्र में रखकर उन्होंने कहा था देश में किसी भी हिस्से में रहने वाले नागरिकों के लिए जातीय और भाषायी आधार पर कोई भेदभाव ना हो। देश की परम्पराओं, आस्था और विश्वास को डॉ० अम्बेड्कर जी ने अपने तरीके से मूल्यंकित किया। इस मूल्यांकन का मूल स्वर की प्रथमत: थी कि देश के सभी नागरिक पहले भारतीय हैं और बाद में उनकी कोई अन्य पहचान । इसी अस्मिता मूलक पहचान को सम्मान दिलाने के कार्य के लिए डॉ० अम्बेड्कर के चिन्तन में सामाजिक भेदभाव को दूर करके लोकशाही (सामाजिक जनतंत्र) की अवधारण पर बल दिया। और इसी सामाजिक जनतंत्र को पहचान देने के लिए डॉ० अम्बेड्कर का चिन्तन और दर्शन अस्तित्व में आया। डॉ० अम्बेड्कर के विचार वास्तविक रूप में समता स्वतंत्रता और बंधुत्व के भावों से जुड़े हुए हैं, जिसमें व्यक्ति और समुदायों के बीच जाति, वर्ष, लिंग और धर्म में किसी तरह के आधार पर कोई भेद न हों । देश का हर नागरिक सिद्धान्त समान हो। डॉ० अम्बेड्कर ने समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आधार पर अग्रणी बल देते हुए व्यक्ति और समुदाय को एक ही राष्ट्र की इकाई माना । डॉ० अम्बेड्कर ने राष्ट्र को कोई भौतिक इकाई नहीं माना । राष्ट्र भूतकालीन लोगों द्वारा किए गए सतत् प्रयासों, त्याग और देशभक्ति का परिणाम, इस परिणाम को सामाजिक चेतना में फलीभूत करने के लिए मानव-मानव में समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना विकसित होगी।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201099 |

भारतीय संविधान, शिल्पी डॉ० अम्बेड्कर ने अपने समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय के साथ बहुजन हिताय दर्शन में 1789 की फ्रांस राज्य क्रांति ने तीन अवधारणों को जन्म दिया । लिबर्टी, इक्वलिटी और फैटर्निटी । भारतीय संविधान और उसकी मूल प्रस्तावना के यही स्वर डॉ० अम्बेड्कर के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं स्वतंत्रता के अधिकार के साथ-साथ सभी सरोकारों में मौलिक दृष्टि रखते हुए देश की सुरक्षा, संप्रभुता, अखंडता और संरक्षण के लिए अगर कोई कानून है या बना हैं; तो वो मानव संरक्षण में मानवों द्व्ज्ञरा आंतरिक भाव से समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और सामाजिक, न्याय ही समाज की गतिशीलता के लिए सद्भावना के रूप में ये मौलिक कार्य तत्त्व आंतरिक भाव में काम करते हैं ।

आज 21वीं सदी के जिस आधुनिक अखंड भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य व्यवस्था में विचरण कर रहे हें उसको जन्म और फलीभूत करने वाले करूणा के महासागर, महामानव, आधुनिक रूप से प्रबुद्ध, समृद्ध, अखंड भारत के लिए डॉ० अम्बेड्कर ने इन्हीं मूल भावों को सर्वप्रथम संविधान में स्थान दिया । डॉ० अम्बेड्कर के जीवन और दर्शन में एक ही प्रश्न बार-बार कौंध रहा था जो समाज के पिछड़ेपन का कारण था । वो है अशिक्षा? उनके विचार से जिस समाज में शिक्षा का अभाव है वो समाज अपने आप कुठित हो जाता है । इस कुठित और हीन हुए समाज से राष्ट्र के निर्माण में कोई भी सिद्धांत इतना प्रभावशाली नहीं हो सकता । डॉ० अम्बेड्कर ने मानवतावादी संविधान की रचना करके सबके आत्मस्वाभिमान की चेतना को जगाने का काम किया ।

समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व का अर्थ संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सभी के साथ जैसा व्यवहार । यही व्यवहार समतामूलक समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए पहला और आखिरी आधार है । सभी व्यक्ति एकपरिधि में रहते हुए ऐसे कार्य करें जिससे सामाजिक एकरूपता के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हो । डॉ० अम्बेड्कर के विचार द्वंद्व और वैमनस्यता समाज की असमानता के मूल कारक हैं । किसी भी सभ्य समाज को इन मूल कारकों से निपटने के लिए सभी के जीवन निर्वाह के लिए समाज में वर्ण, जाति,

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201099 |

लिंग, धर्म के ऊपर उठकर उनके सभी क्षेत्रों में समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय के समान अवसर देने होंगे ।

डॉ॰ अम्बेड्कर बहुत ही दूरदर्शी थे उनकी दूरदर्शिता का मूल कारण उनका अपना अनुभव और दर्शन था । उनके सामने समाज का एक वर्ण और वर्ग असमानता का शिकार था जो अनेक यातनाएं झेल रहा था । इसी सामाजिक एकरूपता में संवैधानिक प्रक्रिया के माध्यम से डॉ॰ अम्बेड्कर ने सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से दलितों, वंचितों, महिलाओं, अस्पृश्यतों, दबे-कुचलों को सशक्त करने के लिए जो योगदान दिया वह डॉ॰ अम्बेड्कर की प्रासंगिकता का कारण है । निश्चय ही डॉ॰ अम्बेड्कर के योगदान को कभी भूलाया नहीं जा सकता।

सन्दर्भ

- धनज्य कीर , डॉ. अम्बेडकर रू लाईफ एण्ड मिशन , पृ . 8
- विश्व प्रकाश गुप्त व मोहिनी गुप्ता , डॉ. भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार , पृ . 36
- डी . सी . डीन्कर , डॉ. अम्बेडकर स्मृति ग्रंथ , पृ . 13
- वसन्त मुन , डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर , पृ . 2
- डी . आर . जाटव , डॉ. अम्बेडकर का नैतिक दर्शन , पृ . 2
- डी . आर . निम , अम्बेडकर जीवन दर्शन , पृ . 13
- डी . सी . डिन्कर , पूर्व उद्धत , पृ . 13–20
- डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यापन , यदि बाका न होते , पृ . 6
- डब्ल्यू . एन . कुबेर , आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. अम्बेडकर , पृ . 8
- डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन , पूर्व उद्धत , पृ . 7
- धनन्जय कीर पूर्व उद्धत , पृ . 31–32
- विश्व प्रकाश गुप्त मोहिनी गुप्त , पूर्व उद्धत , पृ . 185
- बी . आर . सांपला , बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर , पृ . 68
- विश्व प्रकाश गुप्त , मोहिनी गुप्ता , पूर्व उद्धत , पृ . 61
- विश्व प्रकाश गुप्त , मोहिनी गुप्ता , पूर्व उद्धत , पृ . 187
- राजमल सिंह राज , भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर , पृ . 76

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details